Page I

The details of Material is concerned with the U G Students VKSU Maharaja College Ara.

BA (Part I) General Psychology
Paper I

Topic निरिक्षण की विधियाँ (Methods of observation) एवं उनके गुण एवं दोष

आन्तर्निरीक्षण विधि (Introspection Method)

निरिक्षण की यह विधि स्ट्रक्चरलिस्ट स्कूल (Structuralist School) के मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित किया गया है। ~~उन्हें यह~~ उनके द्वारा मनोविज्ञान को चेतन अनुभूति का विज्ञान माना गया और अन्तर्निरीक्षण को ही इसके अध्ययन का विधि माना गया। अन्तर्निरीक्षण में व्यक्ति को अपनी ही मानसिक क्रियाओं का स्वयं निरीक्षण करना पड़ता है एवं उसके बारे में रिपोर्ट देना पड़ता है अत: इसे आत्मनिरीक्षण भी कहा जा सकता है अर्थात जब व्यक्ति अपनी मानसिक क्रियाओं को स्वयं अपने अंदर देखता है और अपनी तात्कालिक अनुभवों को बताता है उसे अन्तर्निरीक्षण कहा जाता है। दूसरे शब्दों किसी व्यक्ति द्वारा किसी उत्तेजना के प्रति होनेवाले चेतन अनुभवों को स्वयं निरीक्षण को व्यक्त करना ही अन्तर्निरीक्षण कहलाता है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर अंतर्निरीक्षण की महत्वपूर्ण विशेषता निम्नलिखित है।

(1) चेतन अनुभूतियों का वर्णन करना और उसके साथ-साथ व्यक्ति के अनुभव का होना दोनों क्रियाएँ साथ-साथ चलती है यदि अनुभव समाप्त होने के बाद वर्णन कार्य अंतर्निरीक्षण नहीं कहा जा सकता है।

(2) अंतर्निरीक्षण में मूल रचनात्मक तत्वों का वर्णन किया जाता है ~~संवेदन, प्रतिमा-~~ संवेदना (Sensation) प्रतिमा (Images) और भाव (feelings) मूल रचनात्मक तत्वों का योग होता है अतः किसी उत्तेजना से होनेवाली चेतन अनुभवों के मूल रचनात्मक तत्वों (अर्थात तीन) की खोजकर उनके गुणों के साथ वर्णन करना ही अंतर्निरीक्षण की क्रिया कही जाती है उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति एक गुलाब के फूल को अपने हाथों में देख रहा है यहाँ दृष्टि संवेदनों द्वारा उसके प्रकार (नया, लाल, पीला या काला रंग), उसकी तीव्रता (सच्चा चमकीला) गाढ़ा या फीका चूँकि वह उस व्यक्ति के हाथ में है इसलिए गति संवेदना द्वारा उसका वजन मुलायम या कड़ा होने का अनुभव उस ~~व्यक्ति~~ व्यक्ति द्वारा किया जाता है उसे यह प्रिय लगता है या अप्रिय, सुखद या दुखद का

अनुभव होता है सभी बातों को स्वयं निरीक्षण का अभिव्यक्त करना ही अंतर्निरीक्षण कहलाता है उस व्यक्ति का अंतर्निरीक्षण कहलाता है

अंतर्निरीक्षण विधि के गुण (Merits of introspection method) -

(1) मनोविज्ञान में व्यक्तियों की मानसिक क्रियाओं अर्थात चेतन अनुभवों का अध्ययन किया जाता है अतः अनुभवों का क्रमबद्ध अध्ययन में इस विधि को अत्यन्त आवश्यक समझा गया है किसी अन्य विधि द्वारा चेतन अनुभूतियों का अध्ययन करना संभव नहीं है

(2) व्यक्ति के मानसिक क्रिया ~~सुख~~, जैसे सुख या दुःख के अनुभव, स्मरण, कल्पना आदि का अध्ययन इस विधि द्वारा ही संभव है

(3) यह एक अनोखी विधि है जो दूसरे विज्ञान में संभव नहीं है

(4) इस विधि द्वारा मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग करने में इस विधि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है

(5) इस विधि से प्राप्त सामग्री द्वारा मनोविज्ञान की दूसरी वस्तुनिष्ठ विधियों से प्राप्त सामग्री की विश्वसनीयता की जाँच की जा सकती है

अतः अंतर्निरीक्षण विधि ~~a~~ एक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण विधि है

Page 4

अंतर्निरीक्षण विधि के दोष (Demerits of the introspection method) :—

(1) यह वैयक्तिक (Personal) एवं आत्मनिष्ठ (Subjective) विधि है इस विधि में मानसिक अनुभूतियों का निरीक्षण केवल अंतर्निरीक्षक (Introspector) ही कर सकता दूसरा कोई व्यक्ति नहीं। अतः एक ही परिस्थिति में दो निरीक्षकों के अनुभव भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। अतः यह एक अवैज्ञानिक विधि है

(2) अंतर्निरीक्षण करते समय अंतर्निरीक्षक को एक ही साथ दोहरा कार्य करना होता है इसका परिणाम यह होता है कि मन दो भागों में बंट जाता है एक तरफ उसका मन जिस मानसिक क्रिया का अंतर्निरीक्षण किया जा रहा है उसके बारे में जानकारी हासिल करता है दूसरी तरफ उस क्रिया के बारे में भी जानकारी प्राप्त करता है इस तरह के विभाजन के कारण अंतर्निरीक्षण की क्रिया ही बदल जाती है

(3) ~~अंतर्निरीक्षण~~ अंतर्निरीक्षण में निरीक्षक (observer) एवं जिसका निरीक्षण किया जाता है अर्थात् प्रयोज्य दोनों एक ही व्यक्ति होता है जो एक दूसरे के विरोधी होते हैं अतः कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार तर्कसंगत नहीं माना गया है कि दोनों कार्य एक ही व्यक्ति करें।

(4) अंतर्निरीक्षण द्वारा प्राप्त तथ्यों की दुबारा जाँच कर उन्हें सत्यापित नहीं किया जा सकता है सत्यापन किसी वैज्ञानिक अध्ययन की सबसे

Page 5

महत्वपूर्ण विशेषता है

(5) इस विधि में भाषा ज्ञान के अभाव में अनेक प्रकार के अनुभवों को सही शब्दों द्वारा व्यक्त करना कठिन हो जाता है

(6) इस विधि का उपयोग सीमित है। बच्चे, बूढ़ों एवं असामान्य व्यक्तियों की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन इस विधि द्वारा संभव नहीं है

(7) इस विधि द्वारा चेतन अनुभवों के रचनात्मक तत्वों का निरीक्षण करना आसान नहीं है यह कार्य केवल प्रशिक्षित व्यक्ति ही कर सकते हैं।

(8) इस विधि द्वारा प्राप्त आंकड़ा (data) निश्चित नहीं होते हैं तथा उसे ठीक ~~ठाक~~ तरह से मापा भी नहीं जा सकता है। इस विधि द्वारा मानसिक अनुभूतियों का केवल गुणात्मक वर्णन ही संभव है

By

Kumar Patil
Assistant professer
Department of Psychology
Maharaja College, Ara

Date 6/05/2020